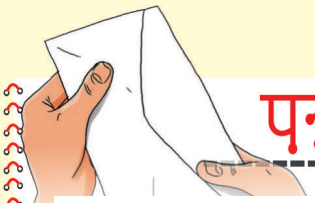

पत्र

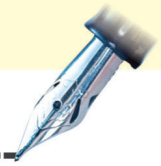

आदरणीय ललित भैया,

अक्षर पर्व के मई 2017 के अंक की प्रस्तावना में कुमार विनोद की कविताओं के बारे में पढ़ा। बहुत ही रोचक ढंग से लिखा है आपने, जैसा कि हमेशा ही होता है। मैं गणितज्ञ- साहित्यिकों के बारे में कुछ कहना चाहती हूँ- ललित भैया की लिखी हुई कुमार विनोद की 78 कविताओं वाली किताब की समीक्षा बेहद दिलचस्प लगी। उनका प्रश्न 78 कविताएँ ही क्यों, इसका जवाब ये हो सकता है, कि 7,8 कविताएँ लिखना चाहते होंगे विनोद जी, जो अल्पविराम हट जाने के कारण 78 हो गई होंगी। ऐसे बहुत से उदाहरण मिल जाएँगे, जहाँ किसी प्रसिद्ध रचना का रचनाकर मैथेमेटिक्स से संबंधित हो। मुझे याद है, (संदर्भ ढूँढ नहीं पा रही हूँ।) – वाग्नेर की रूसी भाषा की पुस्तक में एक छोटा सा लेख था, इस बारे में, कि मैथेमैटिक्स से जुड़े लोग अच्छे साहित्यकार होते हैं।

वाकई में, जैसी कल्पना शक्ति की जरूरत गणित की समस्याएँ सुलझाने में होती है, वैसी ही साहित्य लेखन में भी होती है। मैथेमेटिशियन की भाषा अत्यंत चुस्त, वर्णन – सिर्फ उतने ही, जितने आवश्यक हों, भाषा की, समय की परिधि के भीतर और उसके बाहर भी छलाँग लगाने की ललक उनकी रचनाओं में देखी जाती है।

अनेक प्रसिद्ध मैथेमेटिशियन्स के उदाहरण दिए जा सकते हैं, जिनकी साहित्यिक रचनाएँ भी की प्रसिद्ध हुई हैं- अंतरराष्ट्रीय गणितज्ञ, शिक्षाविद, दार्शनिक, वैज्ञानिक बर्टेण्ड रसेल को नोबेल पुरस्कार गणित के लिए नहीं बल्कि साहित्य में उनके योगदान के लिए दिया गया था, अलेक्सांद्र सोल्झेनीत्सिन गणितज्ञ थे,

प्रसिद्ध टीवी शो 'दि सिम्पसन्स शो' के कई लेखक गणित की पार्श्वभूमि से है, उदाहरण तो कई दिए जा सकते हैं।

बहुत अच्छा लगा कि कुमार विनोद साहित्य के क्षेत्र में उतर आए हैं और इससे भी ज्यादा अच्छी बात ये है कि 'अक्षरपर्व' ने उनका बढ़िया परिचय करवाया है। बधाई!

चारुमति रामदास

अप्रैल अंक की कविताएं ग़ज़लों पर भारी हैं। तथापि दरवेश भारतीजी की ग़ज़लें गौरतलब व काबिलेतारीफ हैं। समकालीन हिन्दी कविता के सशक्त हस्ताक्षर अरुण कमल पर विवेक शा का शोध आलेख प्रशंसनीय है। उन्होंने सत्य ही लिखा है कि अरुण कमल आज के क्रूर, अमानवीय परिदृश्य में विलीन होती जा रही मनुष्यता की खोज में प्रयासरत हैं।

प्रो.भगवानदास जैन, अहमदाबाद

अक्षरपर्व के यों तो सभी अंक अच्छे निकलते हैं, पर अप्रैल अंक की मायनों में बेहतर लगा। इसमें प्रस्तावना से लेकर उपसंहार तक कई चीजें पठनीय लगीं। डा.ब्रजकुमार पांडेय का आलेख वैज्ञानिक दृष्टि क्या होती है, विजय गुप्त का संस्मरण प्रो.बाबूलाल शुक्ल :आसमान छूता वृक्ष, तथा तरसेम गुजराल का पुनःपाठ, कृष्णवीर सिंह सिकरवार का फिल्मी दुनिया में प्रेमचंद का योगदान संबंधी लेख और महेन्द्र राजा जैन द्वारा लिखित प्रभाकर श्रोत्रिय की पुसतक की समीक्षा (अपने-अपने महाभारत), इनके अलावा मलयजी की कविताएं और अन्य रचनाएं पठनीय हैं।

रामनिहाल गुंजन, आरा, बिहार।

अक्षर पर्व के अप्रैल अंक के प्रस्तावना स्तम्भ में आपने जो लिखा वह मेरे मन के बहुत करीब की बात है। यह कितना विडम्बनापूर्ण है कि लोगों ने शादियों पर खर्च की बात ही जैसे भुला दी है। घरों में शादियां होनी बंद ही हो गई है (जो पहले बड़ा अशकुनी मन जाता था), जो लाखों रुपयों के मंच पहले सिर्फ एक दिन के लिए किराए पर लिए जाते थे वे अब महिला संगीत के बहाने कम से कम दो दिन के लिए जरूरी माने जाने लगे हैं। आपने इस बारे में बहुत अच्छा लिखा है। बधाई ! **सदाशिव**

अक्षर पर्व मई 2017 पढ़ा। क्षमा चाहूंगा मै नियमित पाठक नहीं हूँ। यदा-कदा पाठक हूँ। आदरणीय ललित जी की प्रस्तावना में कुमार विनोद जी के ग़ज़ल संग्रह सजदे में आकाश की चर्चा कुछ इस प्रकार उन्होंने की है कि ग़ज़ल संग्रह खरीद के पढ़ने का मन बन गया। नये बिम्बों की प्रयोगशीलता के बारे में आप ने अच्छी बात रेखांकित की है कि कुमार विनोद जी आसानी से मजे में नए शब्दों को इस तरह पिरो लेते हैं कि न तो रस भंग होता है, न अनाधिकार चेष्टा लगती है। नये स्तम्भ - भूले बिसरे शायर में जनाब जहीर कुरेशी जी ने शैख कदीर कुरैशी दर्द जैसे परफेक्शनिस्ट शायर की सदाबहार जीवंत ग़ज़लों से रूबरू करवाया। जब तक न पढ़ी हो ग़ज़ल हमेशा पहली बार पढ़ने सा सुख देती है। दूसरी बात उससे भी महत्वपूर्ण ये है कि जहीर साहेब की इसी वर्ष प्रकाशित नयी पुस्तक कुछ भूले बिसरे शायर को पढ़कर रसानंद ले चुका हूँ। उनकी ग़ज़लें तो हमें पहले से पसंद थीं, अब उनकी पसंद भी पसंद आ रही है। प्रदीप मिश्र जी की कविताएं पढ़ीं। पत्नी के सानिध्य की पावन उपस्थिति और चाँद सूरज के प्रतिबिम्बों के माध्यम से प्रेमिका और पत्नी की तुलना से कविता अपनी बात कह जाती है। **रवि गेहलोत, 94255155**

महोदय ! अक्षरपर्व का मई अंक मेरे सामने है। अंक के पहले पृष्ठ से पढना शुरु किया और प्रस्तावना पर ही अटक गई। प्रस्तावना के बहाने कुमार विनोद के गजल संग्रह से परिचय कराया। गजल में नए प्रयोग मन को छू गए। जमाना मेल का है और तुम खत पर ही अटके हो,पढकर इन नए प्रतिमानो के लिए अक्षर पर्व के माध्यम से कुमार विनोद को बहुत बहुत बधाई। **सुधा गोयल,बुलन्दशहर**